स्थापितः- 1944

अङ्गीभूतिकरण-1981/82

श्री ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत महाविद्यालय

वेदीवन मधुबन

भाया- दामोदरपुर (पीपरा), पूर्वी चम्पारण- 845416

(कामेश्वर सिंह, दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा की अंगीभूत ईकाई)

महाविद्यालय का संक्षिप्त परिचय

विवरणिका

मार्गदर्शक :-
डॉ० विजय कुमार मिश्रा
प्रो० ओम प्रकाश त्रिवेदी
डॉ० पवन कुमार झा

-: संकलन :-
प्रो० ओम प्रकाश त्रिवेदी

प्रधानाचार्य :-
डॉ० आर० पी० चौधुर

सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीय करवावहै।

तेजस्वि नवधीतमस्तु मां विद्विषाहै।।

भारतवर्ष के बिहार प्रांत के पूर्वी चम्पारण जिला अन्तर्गत पिपरा रेलवे स्टेशन से लगभग 2 कि0 मी0 एवं पिपरा चौक बस पड़ाव से 1 कि0 मी0 उतर स्थित ग्राम वेदीवन मधुबन में वर्ष–1944 में ग्रामिणों ने जिनमें अग्रणी व्यक्ति यथा (1.) स्व0 राम वचन पाण्डेय (2) स्व0 लालजी उपाधयाय (3)स्व0 सुरेन्द्र नाथ पाण्डेय आदि प्रबुद्य व्यक्तियों ने संस्कृत भाषा, जो देव भाषा के नाम से विख्यात है, उसके प्रचार–प्रसार हेतु एक ऐसी संस्था के स्थापना की आवश्यकता अनुभव की जहां संस्कृत शिक्षा की ब्यवस्था हो, जिसमें इस देव भाषा के साथ–साथ पठन–पाठन एवं संस्कृति की रक्षा हो सके, विचार विमर्श काल में ही संयोग से उद्‌भट विद्वान जिन्हें वेद, व्याकरण, साहित्य एवं ज्योतिष विषय पर एक समान अधिकार था, स्व0 मुनिश चन्द्र पाठक जी का इस पावन भूमि पर आगमन हुआ, इनके प्रोत्साहन से ग्राम के प्रबुद्व व्यक्तियों ने ब्रह्मचार्यश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त करने हेतु "श्री ऋषिकुल ब्रह्मचार्यश्रम संस्कृत महाविद्यालय" की स्थापना स्व0 लाल जी उपाघ्याय द्वारा उपलब्ध कराये भूखण्ड, जिसे स्व0 राम वचन पाण्डेय द्वारा संस्था के नाम दान किया गया – भूमि पर, 1944 में स्थापित कर, शिक्षण कार्य का श्रीगणेश हुआ ।

ग्राम –वेदीवन मधुबन पीपरा थाना क्षेत्र जो प्रारंभ में पिप्पलीकानन नाम से विख्यात था तथा जो ई0 पू0 325 के मगध साम्राज्य के भाग्य विधाता, चन्द्र गुप्त मौर्य की जन्म स्थली होने से गौरवान्वित है तथा महर्षि वाल्मीकि रचित महाकाव्य रामायण के पात्र एवं भारत के जन–मन में प्रतिष्ठित, लक्ष्मी स्वरूपा, जनकपुर महाराजा सीर– ध्वज

(जनक) पुत्री जनक नन्दिनी सर्व पूज्या माता सीता के विवाहोपरान्त चौठारी की विधि सम्पन्न कराने के स्थल रूप में जगतविख्यात है– पर संस्कृत पठन–पाठन की व्यवस्था प्रारंभ हुई । यही वह स्थल है जहाँ से जगतविख्यात आचार्य विष्णुगुप्त, जिन्हें हम चाणक्य या कौटिल्य के नाम से भी जानते है, ने मगध साम्राज्य पर से नन्द वंश का उन्मुलन कर, मौर्य वंश की स्थापना हेतु चन्द्र गुप्त मौर्य को बचपन में ही उसकी माता से मांग कर उसे सर्व गुण सम्पन्न, एक योग्य सम्राट बनाने की शिक्षा देना प्रारंभ किया, आचार्य विष्णुगुप्त की विद्वता से प्रभावित विद्वतजन आचार्य को सम्मान देने की भावना से इस महाविद्यालय के संचालन का संकल्प लिया, जहां शिक्षको को जीवन यापन राशि, शिक्षकों सहित छात्रों के रहने, भोजन इत्यादि की व्यवस्था, स्व0 राम वचन पाण्डेय के देख रेख में इनके देहावसान पर्यन्त निर्वाध होती रही। महाविद्यालय के प्रारम्भ होने के समय इस संस्था में योग्य एवं कर्मठ तथा त्याग की भावना से ओत–प्रोत विद्वानों द्वारा प्रथमा से आचार्य तक की शिक्षा दी जाने लगी । कालान्तर में मध्यमा तक की शिक्षा सरकार के नीतियों के अनुरूप इस संस्था से पृथग् की गयी। 1961 में आचार्य की शिक्षा देना भी पृथग् कर दिया गया।

संस्थापक एवं प्रथम प्रधानाचार्य स्व0 – मुनीश्चन्द्र पाठक के पश्चात् एक से बढ़कर एक त्यागी एवं विद्वान, क्रमशः–(1). स्व0 जगनाथ पाठक (2). स्व0 मदन गोपाल पाठक (3.) स्व0 रघुबर उपाध्याय (4). स्व0 अच्युतानन्द उपाध्याय (5). डां ललन झा (6). प्रो0 अवधेश्वर पाण्डेय (7). डां चित्रधर झा (8). प्रो0 सुरेश झा (9.) डां अश्विनी कुमार शर्मा आदि प्रभारी प्रधानाचार्य/ स्थायी प्रधानयचार्यों ने महाविद्यालय के उत्थान एवं सर्वग्राह्यता के लिए अपने–अपने विवेक एव सामर्थ्यानुसार निरंतर प्रयत्न कर इसे वर्तमान स्वरूप प्रदान किया ।

वर्ष 2009 में विश्वविद्यालय में एक योगी,संत एवं महान आत्मा स्व0 डॉ नन्द किशोर शर्मा कुलपति पद पर आसीन हुए, जिन्होने संस्कृत शिक्षा को एक गति एवं उँचाई प्रदान करने हेतु प्रभारी प्रधानाचार्यों के स्थान पर एक आयोग गठित कर विद्वान एवं शक्ति सम्पन्न स्थायी प्रधानाचार्यो की नियुक्ति की। इस महाविधालय के सौभाग्य से डॉ अश्विनी कुमार शर्मा प्रथम स्थायी प्रधानाचार्य के रूप में पदस्थापित हुए जिन्हें विश्वविद्यालय में कुलानुशासक पद पर प्रतिनियुक्त किया गया, तत्पश्चात् डॉ राजेन्द्र प्रसाद चौधुर का शुभागमन हुआ । इनके सद् प्रयासो से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महिला छात्रावास,प्रसाशनिक भवन, छात्र–छात्राओं को, आधुनिकता के दौर में अन्य विश्व–विधालयों के छात्र–छात्राओं के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलने की क्षमता वृद्धि हेतु कंप्यूटर, सभी विषयों के पुस्तकों से सुसज्जित वृहत पुस्तकालय, महिला छात्रावास, महाविद्यालय संस्थापक द्वारा प्रदत्त पौराणिक पुरूष छात्रावास, उपस्करों से सुसज्जित अध्ययन/अध्यापन कक्ष, क्रीड़ा सामीग्री, निर्वाध विधुत आपूर्ति हेतु जेनरेटर, पेयजल के लिए आर0 ओ0 मशीन, ठंडे पानी का मशीन इत्यादि से सुसज्जित यह माहाविधालय छात्र छात्राओं के नैसर्गिक विकास में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करता है।

वर्ष 1981/82 में विश्वविद्यालय ने इस महाविधालय को गृहीत कर इसे अंगीभूत इकाई घोषित किया तब से इसके उत्थान मे समय–समय पर कुलपति भी पधार कर इसे गौरवान्वित करते है। अभी बीते माह 29 मार्च 2015 को **"राष्ट्रीय संस्कृत संगोष्ठी"** का आयोजन महाविद्यालय परिसर में हुआ, जिसमें वर्तमान कुलपति– डॉ देवनारायण झा , पूर्व प्रतिकुलपति– डॉ सतीश चन्द्र झा, इत्यादि विद्वानों ने अपने उद्गार से संस्था को, एवं

वार्तालाप से आमजन एवं विद्वानों को संस्कृत भाषा के उत्थान हेतु प्रयासरत रहनें को बाध्य कर दिया । आज डॉ राजेन्द्र प्रसाद चौधुर, प्रधानायार्च के नेतृत्व में डॉ विजय कुमार मिश्र, प्रो० ओमप्रकाश त्रिवेदी, डॉ पवन कुमार झा महविद्यालय की मर्यादा , स्तर एवं शैक्षिणिक व्यवस्था में निरंतर सुधार एवं अच्छा से अच्छा से करने हेतु प्रयासरत है।

आप सभी छात्र/ छात्राऐं हमारे अभिन्न अंग हैं , जिनके बहुमुखी विकास की हमारी परिकल्पना साकार हो, इसमें आपकी ,आपके अभिभावकों की सहभागिता नितांत आवश्यक है। इस कार्य हेतु हम आप को सादर आमंत्रित करते हैं।

आइए हम एक संकल्प के साथ अधिकतम उपेक्षित किये जा रहे इस देव भाषा को सर्वसुलभ बनाने एवं इसके प्रचार प्रसार में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देव भागं यथापूर्वे सञजाना उपासते ।।

महाविद्यालय परिवार की प्रस्तुति

* विधार्थी की सच्ची सुन्दरता उसके गुणों और योग्यता में है न कि बाहरी फैशन में। —प्रेमचंद
* क्रोध में आदमी अपने मन की बात नहीं करता, वह केवल दूसरों का दिल दुखाना चाहता है। —प्रेमचंद
* मानव की सेवा करना मानव का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है। —विनोबा भावे
* कर्म वह दर्पण है जिसमें हमारा प्रतिबिम्ब दिखता है। —विनोबा भावे
* उबलते पानी में परछाई नहीं देख सकते, उसी प्रकार क्रोधित होकर अपनी भलाई नहीं कर सकते। —बुद्ध
* एक बालक शिक्षित होने से केवल अपना ही, भला करेगा जब कि बालिका पूरे परिवार का भला करेगी। —जवाहरलाल नेहरू
* मस्तिष्क के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है जितनी शरीर के लिए ब्यायाम। —जवाहरलाल नेहरू
* संतोष से सर्वोतम सुख प्राप्त होता है। —पतंजलि
* बिना शारीरिक उन्नति के आध्यात्मिक उन्नति, असंभव है। —स्वामी रामकृष्ण परहंस
* दूसरों के अनुभव जान लेना भी व्यक्ति के लिए एक अनुभव है। —रामकृष्ण परमहंस
* मुझे हर इंसान में ईश्वर के दर्शन होते है। —मदर टेरेशा
* ईश्वर ने हमें आँख दो ही दी हैं और कान भी दो, किन्तु मुँह एक, यह इसलिए कि हम अधिक देखें, अधिक सुनें, किंतु बोलें कम। —सुकरात
* क्रोध सदैव मूर्खता से शुरू होता है, और पश्चाताप पर समाप्त —अरस्तु

मुद्रकः- के० पी० प्रेस, मेन रोड (नाका नं० १ के सामने वाली गली में) मोतिहारी